विषय– हिन्दी 

2018

समय–3 घंटा 15 मिनट वर्ग–XII (कला) (A-LL-HIN-OPT)

पूर्णांक– 100

1. बहुवैकल्पिक उत्तरों में से सही उत्तर दें:– 1 X 50 = 50

1. 'बातचीत' के लेखक हैं–
(i) बालकृष्ण भट्ट (ii) जयप्रकाश नारायण (iii) मोहन राकेश (iv) जगदीश चन्द्र माथुर

2. 'उसने कहा था' किस प्रकार की कहानी है–
(i) कर्म प्रधान (ii) भाव प्रधान (iii) धर्म प्रधान (iv) चरित्र प्रधान

3. 'तिरिछ' क्या है–
(i) एक विषहीन जन्तु (ii) एक विषैला और भयानक जन्तु (iii) एक उपयोगी जन्तु (iv) पालतू जन्तु

4. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की रचना है–
(i) रोज (ii) इन्दिरा गाँधी (iii) बातचीत (iv) उसने कहा था

5. 'तिरिछ' शीर्षक कहानी में तिरिछ किसका प्रतीक है–
(i) समाज में व्याप्त विकृति का (ii) समाज में धार्मिक पहलुओं का
(iii) राजनीतिक विरासत का (iv) सामाजिक विरासत का

6. भगत सिंह ने कैसी मृत्यु को सुंदर कहा है–
(i) दुर्घटना में हुई मृत्यु (ii) अपराध के बदले दी गयी फाँसी
(iii) देश सेवा के बदले दी गयी फाँसी (iv) इनमें से कोई नहीं

7. भगत सिंह की रचना है–
(i) संपूण क्रांति (ii) शिक्षा (iii) सुखमय जीवन (iv) एक लेख और एक पत्र

8. 'रोज' शीर्षक कहानी के लेखक हैं–
(i) अज्ञेय (ii) बालकृष्ण भट्ट (iii) उदय प्रकाश (iv) मोहन राकेश

9. ओमप्रकाश वाल्मीकि की रचना है–
(i) सिपाही की माँ (ii) जूठन (iii) रोज (iv) अर्द्धनारीश्वर

10. 'शिक्षा' के लेखक हैं–
(i) नामवर सिंह (ii) मलयज (iii) जे0 कृष्णमूर्त्ति (iv) उदय प्रकाश

11. विनोद कुमार शुक्ल द्वारा रचित कविता है–
(i) हार–जीत (ii) उषा (iii) पुत्र–वियोग (iv) प्यारे नन्हें बेटे को

12. पद्मावत किसकी रचना है–
(i) जायसी (ii) कबीरदास (iii) तुलसीदास (iv) केशवदास

13. जायसी की रचना किस भाषा में है–
(i) मैथिली (ii) ब्रजभाषा (iii) अवधी (iv) खड़ी बोली

14. 'सूरसारावली' के रचनाकार है–
(i) नंददास (ii) परमानंददास (iii) सूरदास (iv) कुम्भनदास

15. तुलसी के बचपन का नाम क्या था–
(i) रामबोला (ii) श्यामबोला (iii) हरिबोला (iv) शिवबोला

16. सूकर क्षेत्र के वासी कौन थे–
(i) श्री हरिदास (ii) जानकीदास (iii) प्रह्लाद दास (iv) नरहरिदास

17. नाभादास की काव्य–रचना का क्षेत्र है–
(i) हरिद्वार (ii) काशी (iii) वृंदावन (iv) मथुरा

18. इनमें कौन–सी रचना जयशंकर प्रसाद की नहीं है–
(i) झरना (ii) आँसू (iii) कामायनी (iv) देवदासी

19. 'चेतना थक सी रही है'–उस समय श्रद्धा अपने को क्या बताती है–
(i) मलय की वात (ii) उत्साह की किरण (iii) आत्म–वैभव का प्रतीक (iv) बासंती झोंका

20. 'दूसरा सप्तक' कब प्रकाशित हुआ–
(i) 1950 (ii) 1951 (iii) 1952 (iv) 1953

21. सेवार्थ कौन–सा संधि है–
(i) दीर्घ संधि (ii) यण संधि (iii) गुण संधि (iv) वृद्वि संधि

22. कपीश का संधि–विच्छेद करें–
(i) कपी + श (ii) कपि+ ईश (iii) कपि + इश (iv) कपिः + ईश

23. वनौषध का संधि–विच्छेद है–
(i) वनः + औषध (ii) वनौष + ध (iii) वन + औषध (iv) वनौ + षध

24. पित्रनुमति का संधि–विच्छेद है–
(i) पितृ + अनुमति (ii) पित्र + अनुमति (iii) पित्रः + अनुमति (iv) पित्रा + अनुमति

25. परमैश्वर्य कौन सा संधि है–
(i) यण संधि (ii) वृद्वि संधि (iii) गुण संधि (iv) दीर्घ संधि

26. वाग्जाल का संधि–विच्छेद है–
(i) वाक् + जाल (ii) वाग्+ जाल (iii) वाक + जाल (iv) वाग + जाल

27. जब + ही की संधि है–

(i) जबही (ii) जभी (iii) जब ही (iv) इनमें से कोई नहीं

28. स्वर संधि के कितने भेद हैं–

(i) तीन (ii) छः (iii) चार (iv) पाँच

29. निश्चय का संधि–विच्छेद है–

(i) निः + नचय (ii) निस + चय (iii) निः + चय (iv) निर + चय

30. नायक का संधि–विच्छेद है–

(i) ना + यक (ii) ने + अक (iii) नै + अक (iv) नो + अक

31. अति + अल्प की संधि है–

(i) अतिअल्प (ii) अतेल्य (iii) अत्याल्प (iv) अत्यल्प

32. विग्रह किसका पर्यायवाची है–

(i) चंद्र (ii) अंग (iii) तोय (iv) भर्ता

33. अश्व का पर्यायवाची है–

(i) पुरुहूत (ii) हय (iii) नीरद (iv) इनमें से कोई नहीं

34. रश्मि का पर्यायवाची है–

(i) अंशु (ii) उत्कंठा (iii) नग (iv) अभी

35. गंगा का पर्यायवाची है–

(i) आपगा (ii) त्रिपथगा (iii) सलिल (iv) वारिद

36. वृक्ष का पर्यायवाची है–

(i) द्युति (ii) नाराच (iii) पादप (iv) शाखामृग

37. घर का पर्यायवाची है–

(i) सदन (ii) कामना (iii) अचला (iv) इनमें से कोई नहीं

38. पक्षी का पर्यायवाची है–

(i) दव (ii) मदन (iii) नभचर (iv) अंडस

39. प्रेम का पर्यायवाची है–

(i) अनुराग (ii) विरत्ति (iii) अशनि (iv) दुलार

40. अल्प का विलोम है–

(i) अतिअल्प (ii) अधिक (iii) अभाव (iv) इनमें से कोई नहीं

41. चपल का विलोम है–

(i) चंचल (ii) चेत्तन (iii) गंभीर (iv) इनमें से कोई नहीं

रामाशीष यादव

42. 'डींगे मारना' मुहावरे का अर्थ है–
(i) गप्प मारना (ii) जोर से कहना (iii) झगड़ा करना (iv) व्यर्थ की बात करना

43. 'कलेजे पर साँप लोटना' का अर्थ है–
(i) भला–बुरा कहना (ii) ईर्ष्या होना (iii) अप्रिय होना (iv) दुःखी को और दुःखी करना

44. 'कमर कसना' मुहावरे का अर्थ है–
(i) सहयोग करना (ii) अटल रहना (iii) तैयार होना (iv) कठोर परिश्रम करना

45. सीता–राम कौन सा समास है–
(i) द्वंद्व समास (ii) बहुब्रीहि समास (iii) कर्मधारय समास (iv) द्विगु समास

46. गंगाजल कौन सा समास है–
(i) द्विगु समास (ii) तत्पुरूष समास (iii) कर्मधारय समास (iv) अव्ययीभाव समास

47. विद्याधन कौन सा समास है–
(i) कर्मधारय समास (ii) तत्पुरूष समास (iii) बहुब्रीहि समास (iv) द्विगु समास

48. समास के मुख्य रूप से कितने भेद हैं–
(i) दो (ii) तीन (iii) चार (iv) पाँच

49. सर्वनाम के कितने भेद है–
(i) तीन (ii) चार (iii) पाँच (iv) छह

50. जितना–उतना कौन सा सर्वनाम है–
(i) प्रश्नवाचक (ii) अनिश्चयवाचक (iii) संबंधवाचक (iv) निजवाचक

2. किसी एक पर निबंध लिखें– 1 X 08 = 08

साहित्य और समाज, होली, वसंत ऋतु, विज्ञान–वरदान या अभिशाप, कम्प्यूटर का महत्त्व

3. सप्रसंग व्याख्या करें– 2 X 04 = 08

क निमोनिया से मरने वाले को मुरब्बे नहीं मिला करते।

अथवा

नारी और नर एक ही द्रव्य की ढली दो प्रतिमाएँ हैं।

ख धनि सो पुरुख जस कीरति जासू।
फूल मरै पै मरै न बासू।।

अथवा

जहाँ मरू ज्वाला धधकती,
चातकी कन को तरसती;
उन्हीं जीवन घाटियों की,
मैं सरस बरसात रे मन।

4. अपने मित्र को दीपावली के पर्व पर शुभकामना देते हुए पत्र लिखिए।

अथवा

खेल–सामान–विक्रेता से खेल–समान मँगवाने के लिए पत्र लिखिए।

5. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर 50–70 शब्दों में दें– 2 X 05 = 10

(i) विश्लेषणात्मक निबंध से आप क्या क्या समझते हैं ?
(ii) जयप्रकाश नारायण के अनुसार डेमोक्रेसी का शत्रु कौन है ?
(iii) आदिमानव ने नारी और पुरूष के अधिकारों का बँटवारा किस प्रकार किया था ?
(iv) भगतसिंह के अनुसार देश को कैसे युवकों की आवश्यकता है ?
(v) कवि कृष्ण को जगाने के लिए क्या–क्या उपमा दे रहा है ?
(vi) कबीर विषयक छप्पय में नाभादास ने कबीर के विषय में क्या कहा है ?
(vii) बरसात को सरस कहने का क्या अभिप्राय है ?
(viii) मुक्तिबोध किन दो विचार धाराओं से प्रभावित रहे थे ?

6. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 150–250 शब्दों में दें– 3 X 05 = 15

(i) 'हार–जीत' शीर्षक कविता का सारांश लिखें ?
(ii) 'पुत्र–वियोग' कविता की क्या विशेषताएँ है ?
(iii) भूषण ने छत्रसाल और शिवाजी का ही गुणगान क्यों किया ?
(iv) 'रोज' कहानी में कहानीकार ने किस प्रकार मालती की अंतःस्थिति का वर्णन किया है ?
(v) 'अर्धनारीश्वर' निबंध में व्यक्त विचारो का सार लिखें ?
(vi) गाँधीजी के शिक्षा संबंधी आर्दश क्या थे ?

7. संक्षेपण करें:– 1 X 04 = 04

आजकल सब योग्यताओं का मानदण्ड रूपया है। किसी धनिक का अल्पज कृपा पात्र ऊँचे पद पर विभूषित हो सकता है और बड़े–बड़े विद्वान धनिकाश्रय के अभाव में दर–दर की धूल फाँकता फिरता है। धनिक का मूर्ख लड़का कॉलेज में पढ़ता है और निर्धन का प्रतिभाशाली लड़का प्रारंभिक कक्षाओं के ऊपर नहीं चढ़ पाता। बड़े–बड़े जग हितकारी काम इसलिए रूके पड़े रहते हैं कि किसी धनिक की उधर दृष्टि नहीं पड़ती। बड़े–बड़े योग्य व्यक्ति जो केवल आंदोलन के परिचालक वरन् पटु राजपुरूष हो सकते हैं, केवल धनाभाव के कारण पीछे रह जाते हैं। यह अभाव इसलिए अधिक खलता है कि वह शारीरिक शक्ति या प्रतिभा के अभाव की भाँति नैसर्गिक नहीं है।

रामाश्रीष 26/04.

विषय– हिन्दी 

2018

(कला)

(1) उत्तरः– (i) बालकृष्ण भट्ट

(2) उत्तरः– (iv) चरीत्र प्रधान

(3) उत्तरः– (ii) एक विषैला और भयानक जन्तु

(4) उत्तरः– (iv) उसने कहा था

(5) उत्तरः– (i) समाज में व्याप्त विकृति का

(6) उत्तरः– (iii) देश सेवा के बदले दी गयी फांसी

(7) उत्तरः– (iv) एक लेख और एक पत्र

(8) उत्तरः– (i) अज्ञेय

(9) उत्तरः– (ii) जूठन

(10) उत्तरः– (iii) जे0 कृष्णमूत्ति

(11) उत्तरः– (iv) प्यारे नन्हें बेटे का

(12) उत्तरः– (i) जायसी

(13) उत्तरः– (iii) अवधी

(14) उत्तरः– (iii) सूरदास

(15) उत्तरः– (i) रामबोला

(16) उत्तरः– (iv) नरहरीदास

(17) उत्तरः– (iii) वृंदावन

(18) उत्तरः– (iv) देवदासी

(19) उत्तरः– (i) मलय की बात

(20) उत्तरः– (ii) 1951

(21) उत्तरः– (i) दीर्घ संधि

(22) उत्तरः– (ii) कपि+ ईश

(23) उत्तरः– (iii) वन + औषध

(24) उत्तरः– (i) पितृ + अनुमति

(25) उत्तरः– (ii) वृद्धि संधि

(26) उत्तरः– (i) वाक् + जाल

(27) उत्तरः– (ii) जभी

(28) उत्तरः– (iv) पाँच

(29) उत्तरः– (iii) निः + चय

(30) उत्तरः– (iii) नै + अक

(31) उत्तरः– (iv) अत्यल्प

(32) उत्तरः– (ii) अंग

(33) उत्तरः– (ii) हय

(34) उत्तरः– (i) अंशु

(35) उत्तरः– (ii) त्रिपथगा

(36) उत्तरः– (iii) पादप

(37) उत्तरः– (i) सदन

(38) उत्तरः– (iii) नभचर

(39) उत्तरः– (i) अनुराग

(40) उत्तरः– (ii) अधिक

(41) उत्तरः– (iii) गंभीर

(42) उत्तरः– (i) गप्प मारना

(43) उत्तरः– (ii) ईर्ष्या होना

(44) उत्तरः– (iii) तैयार होना

(45) उत्तरः– (i) द्वंद्व समास

(46) उत्तरः– (ii) तत्पुरूष समास

(47) उत्तरः– (i) कर्मधारय समास

(48) उत्तरः– (iii) चार

(49) उत्तरः– (iv) छह

(50) उत्तरः– (iii) संबंध वाचक

रामाश्रीष शर्मा

विषय-हिन्दी

2018

समय-3 घंटा 15 मिनट वर्ग-XII (कला) (A-LL-HIN-OPT)

पूर्णांक-100

प्रश्न संख्या-2, 3, 4, 5, 6 एवं 7 का उत्तर : 50

प्रश्न-2. किसी एक पर निबंध लिखें- 1×8=8

## साहित्य और समाज

साहित्य शब्द में 'सहित' का भाव निहित है। दूसरे शब्दों में जो रचना समस्त मानव जाति का हित प्रदान करती है, वह साहित्य है। इसी के आधार पर संस्कृत के आचार्यों ने 'साहितस्य भाव साहित्य' द्वारा साहित्य को परिभाषित किया है। साहित्य के उद्देश्यों के संबंध में अनेक प्राचीन व अरवाचीन विद्वानों ने अपना विचार व्यक्त किया है। डॉ० श्याम सुन्दर दास के मतानुसार-'साहित्य वह है जो हृदय में अलौकिक आनन्द या चमत्कार की सृष्टि करें। प्रेमचन्द जी साहित्य को जीवन को सुन्दर व स्वाभाविक बनाने वाला मानते है। गोस्वामी तुलसीदास इसे स्पष्ट करते हुए कहते है :

"कीरति मणिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सबका हित होई।।

वास्तव में साहित्य सुरसरि के अनुरूप है। इससे किसी का अहित संभव नहीं है। इसमें मानव जीवन के सद्विचार और सदुपदेश संचित होते हैं। यह समाज में व्याप्त कुरुपताओं, विषमताओं को नष्ट कर, संगत एवं कल्याणकारी भावनाओं का विकास करता है। इसकी व्याख्या करते हुए आचार्यों ने लिखा :

'साहित्य समाज का दर्पण है।'

यह समाज के समस्त गुणों अवगुणों पर प्रकाश डालता है। अवगुणों को दूर कर सद्गुणों के विकास की प्रेरणा देता है। श्रेष्ठ साहित्यकार को अपने साहित्य के माध्यम से इस संसार का यश और प्रेम प्राप्त होता है। यह सदैव साश्वत होता है। भौतिक शरीर के नष्ट होने के पश्चात भी उसकी साहित्यिक रचनाएँ यश को अजर और अमर रखने में सफल होती हैं। अत: श्रेष्ठ साहित्यकार किसी भाषा और काल का न होकर सदैव अजर और अमर होता है। श्रेष्ठ साहित्यकार के ऊपर काल और समय की काली छाया नहीं पड़ती है। वह इससे ऊपर होता है। रचनाएँ रचनाकर की अमर कीर्ति है। रचनाकार नश्वर है परन्तु रचनाएँ अविनासी। इसलिए साहित्य के बारे में कहा गया है-

अंधकार है जहाँ वहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।।

साहित्यकार की रचनाओं का आधार सदैव समाज होता है। अत: वे अपने साहित्य में उच्चतम मूल्यों को स्थान देते हैं। वे समाज के सामने लोक व्यवहार के आदर्शों को रखते हैं। इस प्रकार उनकी वाणी लोक

व्यवहार का बोध कराती है। साहित्य का उद्देश्य समाज को कुमार्ग से विमुख कर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। वह यह कार्य नीति उपदेश देकर नहीं वरण प्रियतमा के समान मधुर शैली में देता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि साहित्य से प्रेरणा लेकर अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये गये। साहित्यकार अपने साहित्य के द्वारा अन्याय, अत्याचार, पराधीनता के विरूद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देता है, इसलिए जब कोई किसी देश को अपने अधीन करता है तो सबसे पहले वह उसके साहित्य को नष्ट करता है। उसकी भावनाओं को कुंठित करता है। साहित्य समाज का पथ-प्रदर्शक है। वह इसका गुरु है और सद्‌इच्छाओं को उद्‌बद्ध करके सद्‌कार्यों की प्रेरणा प्रदान करता है। वास्तव में साहित्य के बिना समाज रूपी शरीर में प्रवाहित होनेवाला रूधिर किसी काम का नहीं है। जैसे बिना रूधिर के जीवित शरीर की कल्पना संभव नहीं, ठीक उसी प्रकार बिना साहित्य के श्रेष्ठ समाज की संरचना नामुमकीन है।

## होली

जब व्यक्ति के मन और प्राणों पर भावों का सम्मोहन छा जाता है, जिसके स्मरण मात्र से व्यक्ति का रोम-रोम पुलकित हो जाता हैं तथा जिसके आगमनोपरान्त रिश्तों का बंधन खुल जाता है और आनन्द का समाँ बँध जाता है, उसे होली कहते हैं। इसमें मौज-मस्ती, रवानी और जवानी, रंगीनी और अल-मस्ती की छटा निखर जाती है। चारों और आनन्द और उसके गीतों से वातावरण गुंजायमान हो जाता है। कहीं भी उदासी और कष्ट दिखाई नहीं पड़ता।

माघ की पंचमी को विद्यावारिधि सरस्वती की पूजा होती है। इस समय वसंत का मदमस्त खुमार वातावरण में छा जाता है। वसुन्धरा हरितिया की चादर ओढ़े अपनी सतरंगी लिवास में सुसज्जित रहती है। पृथ्वी का कोना-कोना गुलाबी महक से आछादित, मदमस्त फूलों से ढ़की हुयी बरबस व्यक्ति के मन सरोज को किलकारी मारने के लिए बाध्य कर देती है। खेतों में गेहूँ, चना, खेसारी, मसूर आदि की गदरायी फसलों को देखकर सर्वदा आनन्द और मदमस्त वातावरण छा जाता है। इसकी पूर्णाहुति फाल्गुण पूर्णिमा को होती है। निशाकर अपने सोलहों कलाओं से सुसज्जित, मन सरोज को दिवाकर की भाँति खिलने के लिए बाध्य कर देती है। इस समय जाति, ऊँच-नीच, बड़ा-छोटा, राजा-रंक का बंधन टूट जाता है। भंग के रंग में रंगा समाज अपने वैर-भाव भुलकर नये-नये वस्त्रों से सुसज्जित होकर एक दूसरे के गले मिलते और गुलाल मलते दिखायी पड़ते है। इस रोज दु:ख-कष्ट, आपसी द्वेष, कलह सभी काफूर हो जाते हैं। कही भी इसकी काली छाया दिखाई नहीं पड़ती। इसके स्वागत में घर-घर में मीठे पकवान बनते हैं और लोग एक दूसरे के घर जाकर खाते-खिलाते दिखाई पड़ते हैं। होली से जुड़ी अनेक दंतकथाएँ हैं। एक कथा के अनुसार हिरण्यकशिपु अपने पुत्र प्रह्लाद की भक्ति से तंग होकर उसे इस संसार से विदा नहीं कर सका तो उसे एक तरकिब सूझी। उसकी बहन होलिका के पास एक ऐसी चादर थी जिसे ओढ़कर बैठ जाने पर व्यक्ति जलता नहीं था। अपने भाई हिरण्यकशिपु के आग्रह पर होलिका उस चादर को ओढ़कर और भक्त प्रह्लाद को गोद

में लेकर लकड़ी पुंज पर बैठ गयी। उसमें आग लगा दी गयी। भगवान की कृपा से इतनी तेज हवा चली कि चादर भक्त प्रह्लाद पर चली गयी और होलिका जलकर राख हो गयी। उसी दिन से फाल्गुण पूर्णिमा को होलिका प्रतिवर्ष जलायी जाती है। यह बुराई के ऊपर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। घर गलियों और आस-पास के इलाके की गंदगी को एकत्रित कर होलिका जलायी जाती है।

होली के मौज मस्ती को अनेक कवियों ने रेखांकित किया है। ब्रज की लट्ठमार होली प्रसिद्ध है। यहाँ नारियाँ पुरुषों से पीछे नहीं है। आज बंधन विहीन समाज दिखाई पड़ता है, तभी तो रसखान की गोपियाँ यमुना तट जाने से कतराती है-रसखान कहते हैं

जाहू न कोऊ सखी जमुना जल, रोके खड़ो मग नन्द को लालो।
नैन नचाई चलाई चितै रसखानि चलावत प्रेम को मालो।
मैं जो गई दुति वैरन बाहर मेरी करी गति टूट गयो मालो।
होरी भई कै हरि भए लाल कै लाल गुलाल पगी ब्रजबालो।

सर्वत्र रंग और गुलाल की मस्ती छायी है। कुछ अज्ञानी लोग इसकी पावनता को कलंकित करते हैं। गंदे गीत गाते हैं, किचड़ उछालते हैं और बैर-अदावत साधते हैं यह शर्मनाक और निन्दनीय है। इससे पर्व की पावनता समाप्त होती है। इन चीजों से हमें बचना चाहिए।

## वसंत ऋतु

वसंत ऋतुओं का राजा है। इसका आगमन शीत की समाप्ति पर होता है। पृथ्वी पंक विहीन होकर स्वच्छता को मौन निमंत्रण देती है। प्रकृति अपने जीर्ण-शीर्ष पुराने पल्लवों का त्याग कर नयी कोपलों से सुसज्जित हो गयी। नाना भाँति के पुष्प अपनी सतरंगी छटा से वन-उपवन को सुसज्जित कर दिया। आम के वृक्ष मंजरों से लद गये और उसके ऊपर भ्रमरों की टोली गुंजार करने लगी। सर्वत्र न शीत की कठोरता न ग्रीष्म का ताप। समशीतोष्ण वातावरण की उमंगता प्रत्येक प्राणी के हृदय में उमंग का संचार कर रहा है। इसका वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है-

"पथ में हरियाली के सुन्दर पावड़े भी बिछवा दिये है।
चारो ओर पराग भरे सुमनों के नये बिरवा लगवा दिये है।
ऋतुराज! तुम्हारे ही स्वागत में सरसों के दीप जला दिये है।"

वसंत में चारों ओर मोहक सौन्दर्य दृष्टिकोण होता है। खेतों में सरसों की पीली मखमली चादर बिछ जाती हैं। पलाश वन में लाल दहकते अंगारे टेसू के फूल खिल उठते है। आम्रवन मंजरों के बोझ से झुक पड़ते हैं और उन पर भूमरों की टोली गुंजार करने लगती हैं। इस ऋतु में वन-उपवन नाना भाँति के पुष्पों से सुसज्जित हो जाता है और उन पर तितिलियों के उड़ते झुंड मन को मोह लेते हैं। पक्षियों का कलरव और कोयल की पंचम सूर, मानव मन में प्रेम की कुक उत्पन्न करती है। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रकृति और मानव

जगत् नयी सुन्दरता, उमंग, उल्लास और आनन्द से भर जाता है। गेहूँ की सुनहरी बालियों के पवन स्पर्श के कारण झुनझुन संगीत फूट रहा है। पत्तों के अधरों पर सोया हुआ संगीत मुखरित हो गया है। ऋतुराज वसंत के सुशासन की छटा रोज दिखाई पड़ती है। कलियों के यौवन की अंगड़ाई भ्रमरों को निमंत्रण दे रही हैं। वसंत के आगमनोपरान्त जैसे जीर्ण और पुरातन प्रभाव तिरोहित हो गया है. प्रकृति के कण-कण में जीवन का संचार हो गया है। प्रकृति ने वसंत के आगमन पर अपने रूप को इतना सवारा है, अंग-अंग को सजाया और रचाया कि उसकी शोभा का वर्णन व्यर्थ नहीं है। उसकी उपमा भी नहीं दी जा सकती। कुछ लोग वसंत को मदन महीप का राजकुमार मानते हैं। राजकुमार का पालना वृक्ष है, जिस पर नवीन पल्लवों के बिछौने बिछे हुए हैं। शिशु वसंत के शरीर में सुमनों की पालकी है। पवन इसे पालने पर बैठा कर झुलाता है। कोयल इसे हलराते दुलारते हैं। कंजकली-रूपी नायिका प्रात:काल इस तिलक वसंत को गुलाब की चटकारी दे देकर जगाती हैं वसंत की चर्चा प्रकृति के सुकुमार कवि 'पंत' ने यों की है-

नव वसंत आया<br>
कोयल ने उल्लासित कंठ से<br>
अभिवादन गाया।<br>
रंगो से भर कर की डाली<br>
अधर पल्लवों में रत लाल<br>
पंखुड़ियों के पंख खोल स्थित<br>
गृह वन में छाया।

वसंत प्रतीक है आनन्द का, उल्लास का, रूप और सौन्दर्य का, मौज और मस्ती का, जवानी और रवानी का, स्फूर्ति और संचेतना का, किन्तु क्या पृथ्वी के सभी प्राणियों के मन में भी आनन्द और उल्लास की स्रोत तस्विनी उमड़ पड़ती है। कदापि नहीं। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी की ये पंक्तियाँ कि वसंत आता नहीं ले आया जाता है। यह उनकी मत: स्थितियों को स्पष्ट करता है सब मिलकर वसंत अपनी सौन्दर्य और सुषमाओं के आधार पर मानवीय जीवन में विशिष्ट स्थान रखता है।

## विज्ञान वरदान या अभिशाप

आज सृष्टि के प्रांगण में मानव की दृष्टि जिधर जाती है विज्ञान की देन साफ नजर आती हैं। संसार की वस्तुएँ प्रकृति की संरचना है तो उस पर विज्ञान की कलई उसे चकाचौंध करती है। आज विज्ञान हर क्षेत्र में अपनी काबिलियत पेश कर चुका है। सबसे पहले हम यातायात को लें। आज इस क्षेत्र में एक से बढ़कर एक तेज वाहन विकसित हो चुके हैं। हम आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा सकते हैं।

विज्ञान के संचार के क्षेत्र में चमत्कार जग-जाहिर है। विदेश में बैठे लोगों से आप घर बैठे आमने-सामने बात कर सकते हैं। विज्ञान ने आवास संबंधी भी कम चमत्कार नहीं किये है। अब बीस-बीस

मंजिलों के स्काई भवन बन रहे हैं। उन पर जाने में कोई असुविधा नहीं। बस बटन दबाइये और लिफ्ट के माध्यम से मनचाही मंजिल पर पहुँच जाइये। अब जल के भीतर भवन बनाये जा रहे हैं। हिमालय की चोटी पर घर बनाया जा रहा है, यहाँ तक कि अब चन्द्रमा पर भी निवास करने की बात चल रही है। हम वैज्ञानिक चमत्कारों के द्वारा अपने गृह में ऋतु का आनन्द ले सकते हैं।

मनोरंजन का एक से बढ़कर एक साधन उपलब्ध कराया गया है। टेलीविजन, सिनेमा, आदि अनेक मनोरंजन के साधन विज्ञान की देन हैं। टेप-रिकार्ड, रेडियो आदि चीजें आपको मनोरंजन प्रदान करती हैं।

बिजली की चमक विज्ञान की रीढ़ है। इसके द्वारा अनेक कार्य और संसाधन उपलब्ध कराये जाते हैं। अमावस में भी पूर्णिमा की चाँदनी के दीदार होते हैं। इससे अनेक विलासिता के संसाधन उपलब्ध होते हैं। पंखा, एयरकंडीशन, बिजली, बत्ती इत्यादि इसी की देन हैं। चिकित्सा के क्षेत्र में अनेक यंत्रों का विकास और मानव शरीर के कृत्रिम अंगों की आपूर्ति अनेकों को नयी जिन्दगी प्रदान करती हैं। आज भारत अन्न के मामले में आत्मनिर्भर है वह पूर्ण रूपेण विज्ञान की ही देन है। कृषि के नये-नये यंत्रों का विकास, अनेक प्रकार के शंकर बीजों की उत्पत्ति और आपूर्ति यह विज्ञान की ही देन है। आज जीवन का कोई क्षेत्र विज्ञान के ऋण से बंचित नहीं है। हर क्षेत्र में इसकी धमक और महक मौजूद है।

आज विज्ञान ने एक से एक घातक हथियारों का आविष्कार किया है। एक से बढ़कर एक घातक और शक्तिशाली बम बनाये गये हैं। आज ऐसे-ऐसे घातक हथियारों का विकास कर लिया गया है कि वह पूरे दुनिया को तबाह कर सकती है। इन हथियारों का इस्तेमाल विकास, रक्षा या विनाश और आक्रमण में किया जायेगा। यह मानव पर निर्भर है। विज्ञान निर्माण करता है, उसके इस्तेमाल की प्रक्रिया बताता है, लेकिन कहाँ इस्तेमाल किया जायेगा और किस पर इस्तेमाल किया जायेगा, यह मनुष्य निश्चित करता है। यदि विज्ञान का इस्तेमाल विकास और संरक्षण में किया जाता है तो यह वरदान है, परन्तु दूसरी ओर यदि इसका इस्तेमाल विनाश और भक्षण में किया जाता है तो यह अभिशाप है। वास्तव में वरदान या अभिशाप का निर्धारण इस्तेमाल की प्रक्रियायों पर निर्भर करता हैं अतः व्यक्ति को सोंच-समझकर वैज्ञानिक वस्तुओं, उपकरण, साज-सज्जा आदि चीजों का इस्तेमाल करना चाहिए।

## कम्प्यूटर का महत्व

आज के आधुनिक युग में कम्प्यूटर की महत्ती भूमिका है। यह उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ में एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक उपलब्धि है। वह एक यांत्रिक मस्तिष्क का समूहात्मक और स्वरूपात्मक प्रकार है। इसे यंत्र मस्तिष्क का नाम दिया जाता है। इसके द्वारा कम से कम समय में तीव्र गणना की जाती हैं। इसमें गलतियों की संभावना कम होती हैं। जिस काम को करने में सप्ताहों का समय लगता है, उसे कुछ घंटों में संपादित कर देता है।

कम्प्यूटर यंत्र में एक सेन्ट्रल प्वाइंट होता है, जिसे हम कम्प्यूटर का केन्द्रिय मस्तिष्क कह सकते

हैं। यह केन्द्रिय मस्तिष्क अपने संपूर्ण कार्य को दो तरह के संकेतों को गणितीय कोड या भाषा में करता है। अक्षरों और शब्दों को भी इस कोड या कम्प्यूटरी भाषा में परिवर्तित किया जाता है। इस विधि के द्वारा बड़ी से बड़ी पुस्तक के संपूर्ण लिखित रूप को स्मृति-कोश में भरा जा सकता है।

आज समाचार के क्षेत्रों में भी कम्प्यूटर की महत्ता साबित हो चुकी है। समाचार सार, लेखन, प्रकाशन से लेकर उसकी छपाई, इत्यादि कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से हो रहे हैं। वैज्ञानिकता का परिवेश भी कम्प्यूटर से वंचित नहीं है। इस क्षेत्र में खोज से लेकर उसके प्रयोग, उसका विम्बन फलक, उसकी संप्रेषणशीलता आदि कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से किये जाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में कम्प्यूटर का अत्यधिक महत्त्व है। पुस्तकों की छपाई-गुड़ाई से लेकर उसके प्रकाशन आदि कार्य सुगमता पूर्वक सुन्दर रूप में कम्प्यूटर के माध्यम से किये जाते हैं। आज सुन्दर से सुन्दर छपाई, उसका बेहतरीन डिजाईन आदि कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से हो रहे हैं। औधोगिक क्षेत्र में कम्प्यूटर अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका में है। उसका हिसाब-किताब, कर्मचारियों का वेतन, लेखा-जोखा, आदि समस्त कार्य आज कम्प्यूटर के माध्यम से ही हो रहे हैं। बैंकों में अब सारे कार्य, रुपया का लेन-देन, उसका हिसाब, कर्मचारियों का ब्योरा आदि सारे कार्य सुलभतापूर्वक किये जा रहे हैं। आज इन्टरनेट बैंकिंग, मोबाइन बैंकिंग, ए०टी०एम० आदि की सुविधा कम्प्यूटर का ही खेल है। हम इन कार्यों को सुविधा पूर्वक आसानी से कर पाते हैं।

आज कला, चित्रकारी, फोटोग्राफी आदि कार्य आसानी से कम्प्यूटर के माध्यम से किये जा रहे हैं। इन कार्यों को जितनी आसानी और सुगमता से किया जा रहा वह कम्प्यूटर के बिना दुर्लभ है।

युद्ध के क्षेत्र में भी कम्प्यूटर का महत्व सर्वविदित है। युद्ध की रणनीति यंत्रों का रखरखाव, उसकी गणना, उसका हिसाब-किताब आदि समस्त कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से ही किये जाते हैं। कम्प्यूटर युद्ध, टैंकों के संचालन, उसकी मेमोरी, उसके निर्णय आदि को संचित करना अनेकानेक कम्प्यूटर के माध्यम से किये जाते हैं।

आधुनिक युग में कम्प्यूटर को यंत्र मस्तिष्क की संज्ञा दी गयी है। जैसे मनुष्य का सारा कार्य नियंत्रित और संचालित मस्तिष्क करता है, ठीक उसी प्रकार से आधुनिकता के परिवेश में समस्त कार्यों का संचालन, उसी अच्छाई, बुराई, तौर-तरीके आदि सारे कार्य कम्प्यूटर के माध्यम से ही संचालित होते हैं। कम्प्यूटर मानव मस्तिष्क से श्रेष्ठ नहीं है। वह मानव निर्मित है।

आज के युग में कम्प्यूटर संहारक से लेकर संचालन का कार्य कर रहा है। मानव तेजी से कम्प्यूटर ऐज की ओर अग्रसर हो रहा है। ऐसा मालूम पड़ता है कि कुछ दिनों में हम हर कार्य के लिए कम्प्यूटर पर ही निर्भर हो जायेंगे। हम अपनी बुद्धि को कम्प्यूटर के पास गिरवी रखकर बुद्धिजीवी कहलाने में गौरव की अनुभूति करेंगे। आज का यह वैज्ञानिक उपलब्धि आज हमारे लिए सहायक अवश्य है। हम उसे अपना स्वामी नहीं बनाये, बल्कि आने वाले दिनों में भी उसे अपना सेवक बनाकर ही रखें तभी आप अपने को तथा अपनी स्मिता को सुरक्षित रख सकते हैं।

प्रश्न-3. सप्रसंग व्याख्या करें- 2×4=8

**( क ) "निमोनिया से मरने वाले को मुरब्बे नहीं मिला करते।"**

ये सुललित, सारगर्भित एवं अर्थमण्डित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक 'दिगन्त भाग 2' के "उसने कहा था" नामक कहानी से ली गयी हैं। उसके रचयिता चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी हैं। ये बीसवीं सदी के प्रमुख कहानीकारों में से एक हैं। उनकी लेखकी संपूर्णता को सहजता से उकेरती हैं। उपर्युक्त पंक्तियाँ में वास्तविकता का चित्रण किया गया है।

युद्ध के मैदान में लहना सिंह और बजीरा सिंह डटे हुए हैं। खुद लहना सिंह बोधा सिंह के प्रहरी का कार्य करता है। वह उसे कड़कड़ाती ठंढ में अपनी काठ की तख्ती पर सुलाता है। उसका त्याग देखकर बजीरा सिंह लहना सिंह को सलाह देता है कि खुद बिमार मत पड़ जाना यह जाड़ा क्या है? मौत का परवाना है। ऐसी स्थिति में यदि तुम स्वयं बिमार पड़ गये तो बोधा सिंह की देख-भाल कौन करेगा। निमोनिया से मरने वाले को मुरब्बे नहीं मिलते। मुरब्बा अरबी शब्द है जिसका अर्थ होता है वर्गाकार भूखण्ड। यदि तुम बोध सिंह कि देख-भाल करते चल बसे तो ऐसी स्थिति में तुम्हें अपनी जमीन भी नशीब नहीं होगी। तुम अपना ख्याल करते हुए बोधा सिंह की रखवाली करो। यदि ऐसा नहीं करोगे तो तुम अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाओगे।

**अथवा**

**नारी और नर एक ही द्रव्य की ढ़ली दो प्रतिभाएँ हैं।**

ये सुललित, सारगर्भित एवं अर्थमण्डित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'दिगन्त भाग 2' के "अर्धनारीश्वर" नामक शीर्षक से ली गयी हैं। इसके रचयिता हिन्दी साहित्य के प्रखर बिद्वान कवि रामधारी सिंह दिनकर जी हैं। इन्होंने अपनी लेखनी ग़द्य के क्षेत्रों में भी चलाई और इसमें अद्भुत सफलता मिली। इन पंक्तियों में लेखक नर और नारी की समानता की चर्चा करता है।

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक के दृष्टिकोण में कोई अन्तर नहीं है। वे नर ओर नारी में कोई भेद नहीं मानते। उनके बिचारानुसार दोनों एक ही पदार्थ से निर्मित हैं। लेखक एक उदाहरण के माध्यम से इसे स्पष्ट करता है। वे कहते हैं कि जैसे एक ही पदार्थ से ढाँचे में डालकर नर और नारी की दो भूतियाँ बना दी जाती हैं, ठीक उसी प्रकार ईश्वर ने दोनों को एक ही तरह बनाया है। मानव अपने स्वार्थों के खातिर उनमें अन्तर कर देता है। यह मानव निर्मित है। अपनी सुविधानुसार उसे अबला-सबला, स्वामी-सेवक, पति-भर्ता आदि स्त्री-पुरुष के भेद किये जाते हैं। यह मानव निर्मित है। इसमें स्वाभाविकता नहीं है। मनुष्य अपने सुविधानुसार यह भेद स्थापित करता है।

**( ख )** **घनि सो पुरुष जस किरति जासू।**

**फूल मेरे पर मरै न वासू॥**

Rajiv ...

ये सुललित, सारगर्भित एवं अर्थमण्डित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'दिगन्त भाग 2' के कड़बक से ली गयी हैं। इसके रचयिता हिन्दी प्रेमाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि जायसी हैं। इन्होंने व्यक्ति के कर्म की महत्ता को स्थापित किया है। उसका कर्म सुगन्ध की भाँति अविनाशी है।

प्रस्तुत पंक्तियाँ में कवि कर्म के महत्व को स्पष्ट करता है। राजा रत्नसेन, रानी पद्मावती, बुद्धिमान सुग्गा, राघव-चेतन आदि कोई भी पात्र अविनाशी नहीं है। उनके द्वारा किये गये कार्य अवश्य अविनाशी हैं। ये कभी समाप्त नहीं होंगे, जैसे फूल समाप्त हो जाता, लेकिन उसका सुगन्ध कभी समाप्त नहीं होता। वह वायुमण्डल में बरकरार रहता है, ठीक उसी प्रकार मानवीय कर्म है। मरणोपरान्त भी उनकी कीर्ति मौजूद रहती है। यह अविनाशी और अनश्वर है। कवि का यह दृष्टिकोण कथा के प्रति उसके असीम लगाव को दर्शाता है।

**अथवा**

जहाँ मरु ज्वाला धधकती,
चातकी उनको तरसती,
उन्हीं जीवन घरियों की
मैं सरस बरसात रे मन।

ये सुललित, सारगर्भित एवं अर्थमण्डित पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'दिगन्त भाग 2' के "तुमुल कोलोहल कलह" नामक शीर्षक से ली गयी हैं। इसके रचयिता छायावाद के प्रमुख स्तम्भ महाकवि जयशंकर प्रसाद जी हैं। ये कविता और नाटक के सिरमौर हैं। इन पंक्तियों में श्रद्धा की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि संसारिक परिवेश में उपस्थित व्यवधानों के सहारे श्रद्धा के कार्यों का वर्णन करता है। रेगिस्तान की भूमि में गर्मी ही गर्मी है। यहाँ चारों ओर ज्वाला ही ज्वाला है। चातकी को भी पानी की बून्दों के लिए तरसना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में पावस की रिमझिम बूँदें प्राणवत्ता का संचार करती है। ठीक उसी प्रकार मानव जीवन में कष्टों की ज्वाला धधक रही हो, वहीं चित रूप चातकी को सुख रूपी जल की बुन्दें सकून पहुँचाती हैं और आनन्द रूपी वर्षात जीवन में रस का संचार करती हैं। कवि का बिम्ब विधान बजोड़ है। इसमें कवि ने अपने दार्शनिक दृष्टिकोण को उभारा है। मैं भी कवि के विचारों से पूर्ण सहमत हूँ।

**प्रश्न-4. अपने मित्र को दीपावली की शुभकामना देते हुए पत्र लिखिए।** **1×4=4**

प्रिय मित्र, परीक्षा भवन

जयहिन्द, दिनांक-17.12.2017

आपकी दया एवं ईश्वर की अनुकम्पा के फलस्वरूप मैं सानन्द जीवनयापन कर रहा हूँ। आपकी कुशलता हेतु नित्य परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ। अभी मैं विद्याध्ययन में लीन हूँ और

आशा करता हूँ कि आप भी अपनी तैयारी में संगलग्न होंगे। अब से एक महीने बाद दीपों का पर्व दीपावली मनाया जावेगा। इस पर्व में हम खूब मौज-मस्ती करते हैं। घर-बाहर की सफाई की जाती है। उसे रंग-रोगन से सजाया जाता है। बच्चे अपने दोस्तों के साथ दीपोत्सव मनाते हैं। पटाखे छोड़ते हैं। रंग-बिरंगी फूलझड़ियाँ छोड़ते हैं। दीपों का यह पर्व ढ़ेर सारी खुशियों का सौगात लेकर आता है।

मित्र आप भी अपने दोस्तों के साथ दीपावली मनाते होंगे। फूलझड़ियाँ छोड़ते होंगे। आपको दीपावली की लाख-लाख शुभकामना। पटाखें छोड़ते समय आप अवश्य ध्यान रखें कि इससे स्व अहित या दूसरे का अहित न हो। ऐसी परिस्थिति में अहित होने पर उसका दीपावली फीका हो जायगा। मेरे तरफ से बड़ों को प्रणाम एवं छोटों को शुभ आशीर्वाद।

सेवा में
दिनेश प्रसाद
ग्राम+पो०-गुंजरचक
जिला-नालन्दा

आपका प्रिय मित्र
पंकज कुमार
कुम्हरार, पटना-26

**अथवा**

**खेल-सामान-विक्रेता से खेल-सामान मंगवाने के लिए पत्र लिखें?**

सेवा में,

**प्रबन्धक महोदय,**

छाबड़ा स्टोर, पटना

विषय- खेल-सामानों की आपूर्ति करने के संबंध में।

महाशय,

साग्रह अनुरोध है कि मेरे विद्यालय में अगले माह खेल-कूद प्रतियोगिता होने जा रही है। इस प्रतियोगिता में अधिक खेल-सामग्री की आवश्यकता होगी। मैं अपने दूत के माध्यम से उसका लिस्ट भेज रहा हूँ। आप कृपा कर उन सामानों को समुचित दाम के साथ लिस्ट बनाकर पत्र-वाहक के माध्यम से भेजने का कष्ट करेंगे। सामान प्राप्ति के एक सप्ताह के अन्दर मैं उसका पूर्ण भुगतान कर दूँगा। विशेष दर्शनोपरान्त।

भवदीय
प्रधानाध्यापक
न०सा०क०वि० नया टोला
पटना

सेवा में
प्रबंधक,
छावड़ा स्टोर
बहादुर हाऊसिंग कॉलनी
पटना-26

प्रश्न-5. निम्न प्रश्नों मे से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 2×5=10

**(I) विश्लेषणात्क निबंध से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर- विश्लेषणात्मक निबंध को विवेचनात्मक या विवरणात्मक निबंध भी कहा जाता है। जिस निबंध में किसी वैज्ञानिक खोज, साहित्यिक समीक्षा, सामाजिक समस्या, आविष्कार आदि वस्तुओं के संबंध में विवरणात्मक ढ़ंग से चर्चा की जाती है उसे विश्लेषणात्मक निबंध कहा जाता है इसमें विषय वस्तु की सटीक समीक्षा की जाती है।

**(II) जयप्रकाश नारायण के अनुसार डेमोक्रेसी का शत्रु कौन हैं?**

उत्तर- जयप्रकाश नारायण के अनुसार डेमोक्रेसी के शत्रु वे हैं जो जनता के विचारों का विरोध करते हैं, उस पर लाठियाँ चलवाते हैं, गोलियाँ बरसाते हैं, उनके शान्तिमय प्रदर्शन में व्यवधान डालते हैं तथा उनके शांति जुलुस को तितिर-वितर करते है। उन्हें बन्दी बना लेते हैं तथा उनकी आवाज को दबाने का प्रयास करते हैं।

**(III) आदि मानव ने नारी और पुरुष के अधिकारों का बंटवारा किस प्रकार किया था?**

उत्तर- आदि मानव ने नारी-पुरुष के बीच में कोई भेद नहीं किया था उनका मानना था कि हम साथ-साथ जन्में है। साथ-साथ धूप सेवन करते हैं, भोजन करते हैं, चाँदनी रात मे घूमते हैं, आहार संचय करते हैं और भोजन करते हैं। यदि कोई जंगली जानवर हम पर वार करता है तो उसका मुकाबला करते हैं। ऐसी परिस्थिति में विभिन्नता अनुचित है। हमारे सभी अधिकार समरूप हैं।

**(IV) भगत सिंह के अनुसार कैसे युवकों की आवश्यकता है?**

उत्तर- भगत सिंह के अनुसार देश को वैसे युवकों की आवश्यकता है जो देश पर अपने को कुर्बान कर सकें। यह कार्य विद्यार्थी ही कर सकते हैं। वे पढ़ें अवश्य, लेकिन आवश्कता पड़ने पर वे देश के खातिर मरने-मिटने को तैयार रहें। विद्यार्थी राजनीति का ज्ञान हासिल करें और जरुरत पड़ने पर उसमें कूद पड़ें। इस कार्य में वे हिचकिचायें नहीं।

**(V) कवि कृष्ण के जगाने के लिए क्या-क्या उपमा दे रहा है?**

उत्तर- कवि कृष्ण को जगाने के लिए विविध उपमा देता है। वे कहते है जागिये। तालाबों में कमल खिल गये हैं, जंगल में नाना भाँति के पुष्प खिल गये हैं, पक्षियाँ वृक्षों पर चहचहाने लगी हैं, मुर्गा बाँग दे रहा है, ये सारी चीजें सबेरा होने का सूचक है, अत: आप भी अब जागें अब सोने का समय नहीं है।

**(VI) कबीर विषयक छप्पय में नामादास ने कबीर के विषय में क्या कहा है?**

उत्तर- जो व्यक्ति अपने भक्ति से विमुख होता है वह अपना सारा धर्म समाप्त कर लेता है। वह अपने योग, व्रत, धर्म आदि को तुच्छ बना देता है। वह अपने कर्मों की महत्ता को नहीं समझता। अत: योग, व्रत, समय हित आदि के माध्यम से व्यक्ति सद् कार्यों का समवहन करें। इससे दूर रहकर वह भक्ति के सभी स्वरूप का वरण नहीं कर सकता।

**(VII) बरसात को सरस कहने का क्या अभिप्राय है?**

उत्तर- जल रस है। वह सृष्टि में रस का संचार करता है। जल बरसा कर वृक्ष, पौधे, फल, फूल सबमें रस का संचार करते हैं। गर्मी में पृथ्वी बूँदों के लिए तरसती हैं। जब बरसा होती हैं तो सारे जीव-जन्तु आनन्द से विभोर हो जाते हैं। जीवन में श्रद्धा का भी यही स्थान है। वर्षा वसुन्धरा पर रस का सर्जन करती है, इसलिए इसे सरस कहा गया है।

**प्रश्न-(VIII) मुक्तिबोध किन दो धाराओं से प्रभावित रहे थे?**

उत्तर- मुक्तिबोध अस्तित्ववाद एवं मार्क्सवाद के समर्थक थे। ये इन दो विचारों के सन्निकट रहकर उसी के अनुरूप समाज की स्थापना करना चाहते थे। उन्होंने विचारों का मानव जीवन में प्रचार-प्रसार किया। आगे चलकर मुक्तिबोध इन्हीं विचारों के अनुरूप अपने को ढ़ाल लिया। ये सच्चे मार्क्सवादी बनकर समाज में उभरे और इसी का प्रचार-प्रसार किया।

**प्रश्न-6. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 150-250 शब्दों मे करें।** $3\times5=15$

**(I) 'हार-जीत' शीर्षक कविता का सारांश लिखें?**

उत्तर- अशोक वाजपेयी द्वारा लिखित हार-जीत शीर्षक कविता एक गद्य कविता है। इस कविता की विशेषता यह है कि इसमें दिन-प्रतिदिन जीवन अनुभवों की, धरती से बोल-चाल, बात-चीत और सामान्य मन: चिंतन के रूप में अंकन हुआ है। कवि युद्ध की स्थिति से क्षुब्ध है। उसके अनुसार किसकी हार और किसकी जीत होती है। यह सब शासकों का आडम्बर है। वह हार-जीत पर प्रश्न खड़ा करता है। कवि के अनुसार शासक लोग उत्सव मना रहे हैं। उन्हें बताया गया है कि उसकी सेना विजय कर लौटी है। नागरिकों को पता नहीं कि किस युद्ध में उनकी सेना गयी थी। यह विजय पर्व किसलिए है। शासक वर्ग धोखेबाज है। वह जनता को मूर्ख बना रही है। शासकों के आने पर सड़कों को धोया जा रहा है कि धूल उनके ऊपर न पड़ जायें। जो धूल चन्दन है वह जनता का सिरमौर है, लेकिन नेताओं के लिए गंदगी। शासक और शासित वर्ग में कितना अन्तर है।

**(II) पुत्र-वियोग कविता की क्या विशेषता है?**

उत्तर - श्रीमति सुभद्रा कुमारी चौहान लिखित यह कविता एक शोकगीत है। इसमें कवयित्री अपने पुत्र के आकस्मिक निधन की चर्चा करती है। वे अपनी मातृ हृदय की वेदना को स्पष्ट करती हैं। माता का हृदय बड़ा विशाल है। इस कविता में माँ के हृदय में उठने वाली हुक, वेदना, शोक, पीड़ा, कष्ट आदि को दर्शाया गया है। पुत्र के आकस्मिक निधन के बाद माँ किस प्रकार असहनीय पीड़ा का शिकार हो जाती है। माँ की पीड़ा धीरे-धीरे गहराती चली जाती है। वह कमने का नाम नहीं लेती। पुत्र के निधन के बाद माँ को अपने हृदय को समझाना कठिन होता है। वास्तव में माँ ममता की साक्षात् प्रतिमूर्त्ति होती है।

**(III) भूषण ने क्षत्रसाल और शिवाजी का गुणगान क्यों किया?**

उत्तर - भूषण रीतिकालीन कवि हैं। रीतिकाल में कविता कामिनी कैद हो चुकी थी। कवियों का एक पक्ष राजाश्रम में रहकर शृंगारिक रचनाओं का सर्जन कर रहा था और दूसरा पक्ष जो स्वतंत्र रहकर कविता लिख रहा था, उसमें आचार्यात्व की भावना पनप रही थीं। इस समय राष्ट्रीय शासक ऐसे थे, जिनके हृदय में, जातिगत स्वाभिमान और भारतीय संस्कृति हिलोरें ले रही थीं। ये दो शासक थे, छत्रसाल और शिवाजी। इन दोनों ने जातिगत भावना और संस्कृति के रक्षार्थ अपनी तलवार उठायी। भूषण के हृदय में राष्ट्रीय भावना कुलाचें मार रही थी। इसलिए उन्होंने इन्हीं दो वीरों को चुना। उनके कार्यों की सराहना की तथा उनके रणकौशल और तलवारबाजी की प्रशंसा की। उस समय जातिगत भावनाएँ और राष्ट्रीय एकता एक ही सिक्के के दो पहलू थे।

**(IV) 'रोज' कहानी में कहानीकार ने किस प्रकार मालती की अन्त:स्थिति का वर्णन किया है?**

उत्तर - मालती और एक अतिथि के बीच मौन को उसका बच्चा तोड़ता है। वह रोता है और मालती उसे संभालने अन्दर चली जाती है। इस बीच अतिथि एक तीखा प्रश्न पूछता है और मालती हूँ से उत्तर देती है। उसका जीवन नीरसता और यांत्रिक भावाओं से भरा है। वह उसी के अनुरूप कार्य करती है। वह कर्त्तव्यपालन की औपचारिकता पूरी करती प्रतीत होती है। अतिथि से उसके संवाद में उत्साहहीनता और ठण्ढापन झलकता है। उसका व्यवहार उसकी हृदयदशा का सूचक है।

कहानी के दूसरे भाग में मालती की अन्तर्द्वन्द्व, मानसिक स्थिति, बीते बचपन की स्मृतियों में खोने से एक असंज्ञा की स्थिति, शारीरिक जड़ता और थकान का कुशल अंकन हुआ है। मालती पति के खाने के बाद रोज दिन में तीन बजे भोजन करेगी और रात में दस बजे। यह रोज का क्रम है। नित्य अपने पति की प्रतीक्षा में घड़ियाँ गिनना उसकी नियति बन चुकी है। इससे उसके जीवन की मन:स्थिति का चित्रण होता है।

**(V) 'अर्धनारीश्वर' निबन्ध में व्यक्त विचार का सार लिखें?**

उत्तर - अर्धनारीश्वर निबन्ध में निबन्धकार में सृष्टि के दो अनमोल रतन नर और नारी के परस्पर सम्बन्धों और विचारों को स्पष्ट किया है। दोनों सब प्रकार से एक समान हैं, लेकिन उनका सम्बन्ध और विचार एक नहीं। नर नारी के गुण को अपनाना नहीं चाहता। वह मानता है कि उसे उसका गुण अपनाने से स्त्रैण की भावना आ जायेगी। दूसरी ओर स्त्री भी पुरुष के गुण को अपनाना नहीं चाहती। वह मानती है कि पुरुष गुण सीखने से उसके स्त्रीत्व में बट्टा लगेगा। इस चिंतन से दिनकर दु:खी है। वे प्रसिद्ध चिंतक और लेखक रवीन्द्रनाथ, प्रसाद और प्रेमचन्द्र के विचारों से भी दु:खी हैं। इनका मानना है कि मानव ने जब कृषि कार्य प्रारम्भ किया उस वक्त पुरुष घर के बाहर और नारी अंदर काम करती थी। नारी पराधीन होकर अपना समस्त मूल्य भूल गयी। वह अपने स्त्रित्व की अधिकारिणी भी न रही। समाज ने भी नारी को भोग्या

समझकर उसका खूब उपयोग किया। दिनकर मानते हैं कि नर और नारी दोनों एक ही पदार्थ से बनी दो प्रतिमाएँ हैं। दोनों जब तक एक दूसरे के गुण को ग्रहण नहीं करेंगे तब तक उनमें पूर्णता नहीं आयेगी।

**(VI) गाँधीजी के शिक्षा सम्बन्धी आदर्श क्या थे?**

उत्तर - गाँधीजी तत्कालीन शिक्षा पद्धति से संतुष्ट नहीं थे। वे वर्तमान शिक्षा पद्धति को बड़ा खौफनाक एवं हेय मानते थे। उनका आदर्श था बच्चों में चरित्र और बौद्धिक विकास करना। उनके मतानुसार वर्तमान की शिक्षा-पद्धति बच्चों को बौना बनाती है। उनका उद्देश्य था कि बच्चे ऐसे सुसंस्कृत पुरुष और नारी के सम्पर्क में आयें जो सुसंस्कृत हों। जिसका चरित्र उत्तम हो तथा कार्य सम्पादन की पद्धति श्रेष्ठ हो। गाँधीजी की वास्तविक शिक्षा यही थी। वे बच्चों में ज्ञान, चरित्र एवं बौद्धिक विकास चाहते थे। विद्यालयी शिक्षा तो उनका माध्यम मात्र है। जो बच्चे रोजगार हेतु शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं उन्हें औद्योगिक शिक्षा दी जाये। उनका यह कदापि मानना नहीं था कि शिक्षा प्राप्ति के बाद परम्परागत व्यवसाय का त्याग कर दिया जाये। वे जो भी ज्ञान विद्यालय में प्राप्त करेंगे, उसके माध्यम से ग्रामांचल को उन्नति के शिखर पर ले जायें। उनका शिक्षा सम्बन्धी आदर्श यही था।

**प्रश्न-7. संक्षेपण करें-** **1×4=4**

आजकल सब योग्यताओं का मानदण्ड रुपया है। किसी धनी का अल्पज्ञ कृपा पात्र ऊँचे पद पर विभूषित हो सकता है और बड़े-बड़े विद्वान धनिकाश्रय के अभाव में दर-दर की धूल फाँकता फिरता है। धनिक का मूर्ख लड़का कॉलेज में पढ़ता है और निर्धन का प्रतिभाशाली लड़का प्रारम्भिक कक्षाओं के ऊपर नहीं चढ़ पाता। बड़े-बड़े जग हितकारी काम इसलिए रूके पड़े हैं कि किसी धनिक की ऊधर दृष्टि नहीं पड़ती। बड़े-बड़े योग्य व्यक्ति जो केवल आन्दोलन के परिचालक वरन् पटु राजपुरुष हो सकते हैं, केवल धनाभाव के कारण पीछे रह जाते हैं। यह अभाव इसलिए अधिक खलता है कि वह शारीरिक शक्ति या प्रतिभा के अभाव की भाँति नैसर्गिक नहीं है।

**संक्षेपण :** **शीर्षक : धन का अभाव**

आजकल धन का विशेष महत्व है। धन से गुणों का मूल्यांकन होता है। निर्धन व्यक्ति अपने कार्य के बल पर राजपुरुष हो सकते हैं, लेकिन धनाभाव के कारण पीछे रह जाते हैं। यह शारीरिक शक्ति या धनाभाव के समान नैसर्गिक नहीं है।

कुल शब्दों की संख्या-111 संक्षेपित-42